भृगु, च्यवन, परशुराम, चरणदास जैसे ऋषि–सन्तों और सम्राट हेमू, श्री गोपीचन्द, श्री ठाकुर दास जैसे राजपुरुषों की भृगुवंशियों की ऐतिहासिक परम्परा में एक और भृगुवंशी जुड़ गया – श्री गिरधारी लाल भार्गव। यह शायद उन लोगों को कुछ अतिशयोक्ति लगे जो श्री गिरधारी लाल जी की अन्तिम यात्रा के दृश्य को साक्षात् नहीं देख पाये कि कैसे उस अजातशत्रु की अरथी पर हिन्दु–मुसलमान, छोटे–बड़े, दक्षिणपन्थी–वामपन्थी हजारों की संख्या में छतों से मीलों तक फूल बरसाते जाते थे और जिनकी आँखों से आँसुओं की झड़ी रोके नहीं रुक पा रही थी। लेकिन जिन्होंने इस दृश्य को देखा उन्हें विश्वास नहीं हो रहा था कि आखिर यह सब अनायास ही कैसे हो रहा है। ऐसा इसलिये हो रहा था कि श्री गिरधारी लाल भार्गव ने नर को नारायण समझकर उनकी सेवा की और वे स्वयं नर से नारायण बन गये।

अन्दर कुछ लोगों की श्रृद्धांजलियाँ और कुछ चित्रावली देखें तो शायद जो हम कह रहे हैं – उस पर आपको विश्वास आ जायेगा।

& lEikndh; vkj l

संक्षिप्त परिचय - स्वर्गीय श्री गिरधारी लाल भार्गव, सांसद

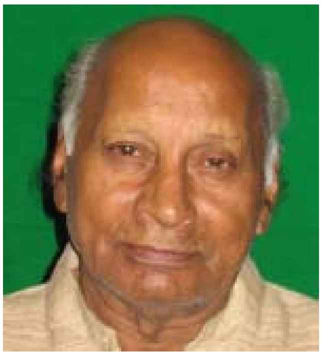

आपका आज सुबह 8.3.2009 को अहमदाबाद के अपोलो अस्पताल में हृदय गति रुक जाने के कारण अचानक देहान्त हो गया है। आपकी आयु 77 वर्ष थी।

आपका जन्म जयपुर निवासी श्री दामोदर लाल भार्गव एवं श्रीमती सरस्वती देवी (रिवाड़ी) के परिवार में हरसोली तहसील में 11 नवम्बर 1931 में हुआ था। आपने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा जयपुर में प्राप्त की। आपके पिता जयपुर के जाने माने वकील थे। आपको बचपन में ही राजनीति एवं देशभक्ति विरासत में मिली थी। आपका विवाह श्रीमती मालती भार्गव (जयपुर) के साथ 24.6.1958 को हुआ था। बताया जाता है कि आपके विवाह में उस समय लगभग 1500 से अधिक लोग सम्मिलित हुए थे।

आपने पहली बार म्युनिसिपल काउन्सलर का चुनाव वर्ष 1957 में जीता था। आप भारतीय जनता पार्टी से प्रारम्भ से ही जुड़े रहे। आप वर्ष 1975-77 में दो वर्ष श्री भैरोंसिंह शेखावत जी के साथ जेल में रहे। एमरजेंसी के समय आपको जेल में अनेक पीड़ायें सहनी पड़ीं। एमरजेंसी के बाद आपने 1977 में राजस्थान विधान सभा का चुनाव, श्री भैरोंसिंह जी के साथ जीता तथा उनके मुख्यमन्त्री बनने पर आप UIT के अध्यक्ष बनाये गये। उसी समय आपने आजके भृगु सदन की भूमि दिलवाई और जयपुर भार्गव सभा के लिए आज की मजबूत स्थिति के लिए पूरा सहयोग दिया।

आपके तीन पुत्री-दामाद श्रीमती मीनाक्षी-श्री राकेश (अमेरिका), श्रीमती ममता-श्री भुवनेश चन्द्र (चण्डीगढ़), श्रीमती समता-श्री आशीष (दिल्ली) तथा एक पुत्र श्री मनोज-श्रीमती अर्चना (जयपुर) में हैं। आपने अपने सभी बच्चों को सुसंस्कृत बनाया है।

आपको प्रथम बार वर्ष 1989 में जयपुर लोक सभा सीट से श्री भवानी सिंह जी (महाराज जयपुर) को चुनाव में हराकर विजय प्राप्त की तथा तबसे आज तक 6 बार लोक सभा चुनाव जीते हैं। आपको अभी हाल में भारतीय जनता पार्टी ने 7वीं बार जयपुर से चुनाव लड़ने के लिये टिकट प्रदान किया था।

दिनांक 8 मार्च 2009 को भाई गिरधरी लाल जी के आकस्मिक देहावसान की खबर बिजली की तरह से पूरे जयपुर नगर में फैल गयी। सभी दुःख भरे हृदय से उनको याद कर रहे थे और उनके सहज स्वभाव की भूरि–भूरि प्रशंसा कर रहे थे। हम यहाँ दिनांक 9 एवं 10 मार्च, 2009 के स्थानीय समाचार– पत्रों से छाँट कर कुछ अंश दे रहे हैं। पाठकगणों को यह अनुभूति होगी कि उनका व्यक्तित्व कितना विशाल था। वह एक संत से कम नहीं थे। अनेक विशिष्ट लोगों के उद्‌गार से उनकी महानता का आभास होता है।

राजस्थान पत्रिका

जयपुर, सोमवार 9 मार्च 2009 — प्रथम पृष्ठ

बिछुड़ गया जयपुर का लाल

सांसद गिरधारी लाल भार्गव का निधन, अंतिम संस्कार आज

जयपुर/अहमदाबाद, 8 मार्च। जयपुर के सांसद गिरधारी लाल भार्गव का सुबह अहमदाबाद के अपोलो अस्पताल में हृदयघात से निधन हो गया। शाम को भार्गव की पार्थिव देह को ओएनजीसी के विशेष हेलीकोप्टर से जयपुर लाया गया। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष राजनाथ सिंह तथा राष्ट्रीय संगठन महामंत्री रामलाल अंत्येष्टि में शामिल होने जयपुर आ रहे हैं।

*

देर तक याद आएगा दूर जाने वाला

आशुतोष शर्मा - तीन दिन पहले ही भार्गव साहब को जयपुर से सातवीं बार लोकसभा के लिए भाजपा का टिकट मिला तो रात करीब 12 बजे मैंने उनसे बात की थी, नींद में लग रहे थे, लेकिन उत्साह पूरा। बोले - 'इस बार रिकार्ड बनाना चाहता हूँ, पहले से अधिक वोटों से जीतने का। यह मेरा आखिरी चुनाव है।' जीत का रिकार्ड बनाने की हसरत लिये भार्गव साहब चले गये।

*

टिकट नहीं काट पाई पार्टी

भार्गव की लोकप्रियता का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि इस चुनाव में भी पार्टी को उन्हें ही उम्मीदवार बनाना पड़ा। कई नामों पर चिन्तन के बाद भी पार्टी उनका टिकट नहीं काट पाई। दूसरे नामों पर विचार के दौरान प्रदेश नेतृत्व और राष्ट्रीय नेतृत्व के सामने सवाल पैदा हो गया कि आखिर भार्गव का टिकट क्यों काटा जाये, क्या उनका यही कसूर है कि वो लगातार जीत रहे हैं। अन्तत: पार्टी ने पहली सूची में नाम दर्ज किया।

*

जिसने सुना, दौड़ा चला आया

हर आंख नम। चेहरे पर अंतिम दर्शन की व्याकुलता। ऐसा लगा मानो अब कोई दर्द बांटने नहीं आएगा। भीड़ इतनी कि तिल रखने की भी जगह नहीं। कुछ ऐसे ही हालात थे, सांसद गिरधारी लाल भार्गव के नाहरगढ़ रोड स्थित निवास पर। सुबह से शाम तक पार्थिक देह आने का लोग बेचैनी से इंतजार करते रहे, जब पार्थिक शरीर पहुंचा तो रूलाई फूट पड़ी।

नेक इंसान, बेजोड़ सांसद थे भार्गव

भार्गव का निधन अत्यन्त दुखदायक है। उनकी लोकप्रियता का आधार था - परिवारों की सेवा करना। लोकसभा के सांसद के रूप में उनका कोई जोड़ नहीं था। नियमित सदन में आना, अंत तक उपस्थित रहना और जो जिम्मेदारी दी गयी हो उसे निभाना उनकी विशेषता थी। उनके निधन से पार्टी को अपूरणीय क्षति हुई है।

- लालकृष्ण आडवानी

झकझोर दिया

मेरे जन्मदिन पर या तो भार्गव खुद आते थे या फोन पर बहनजी कहते हुए बधाई देते थे। अजब संयोग रहा कि मेरे जन्मदिन पर ही कभी बधाई देना नहीं भूलने वाले भार्गव साहब के निधन की खबर आई, जिसने हम सभी को झकझोर कर रख दिया।- **वसुंधरा राजे,** नेता प्रतिपक्ष

लोकप्रिय सांसद खो दिया

प्रदेश ने एक लोकप्रिय सांसद खो दिया है। सुबह उनकी असामयिक मृत्यु का समाचार सुनकर मुझे बहुत धक्का लगा है। वे बड़े मिलनसार व्यक्ति थे। लोगों के हितसाधन में वह गहरी दिलचस्पी रखते थे। लोगों के दुख-सुख में शामिल होना उनका स्वभाव था।

- एस.के. सिंह, राज्यपाल

*

याद रहेगी जनसेवा

भार्गव को जनसेवा, मिलन-सारिता एवं सहज स्वभाव के कारण सदैव याद किया जाएगा। मैं ईश्वर से उनकी आत्मा की शांति एवं शोक संतप्त परिजनों को आघात सहन करने की शक्ति देने की कामना करता हूँ।

- अशोक गहलोत, मुख्यमंत्री

*

कम ही देखने को मिलते है

मुझे व्यक्तिगत क्षति हुई है। इतना गहरा आघात लगा है जैसे परिवार का कोई सदस्य चला गया। वे मेरे अनुज थे। उनका जनता से सीधा जुड़ाव रहा। ऐसे जनसेवक कम ही देखने को मिलते हैं।

- भैंरोसिंह शेखावत, पूर्व उप राष्ट्रपति

राजस्थान पत्रिका, जयपुर 9-3-2009

जन-जन से दिल का नाता

सासंद गिरधारी लाल भार्गव उन गिने-चुने नेताओं में थे, जो अपने जनाधार के बल पर संसद में पहुँचे। उनका कोई ठोस जातीय आधार नहीं था। जनता के सुख-दुख में शरीक होकर और उनके मुद्दों को उठाकर उन्होंने जनाधार अर्जित किया। आम आदमी से तो इतना जुड़ाव था कि उनके लिए नारा बना- 'जिसका कोई न पूछे हाल उसके संग गिरधारीलाल'। जयपुर की गलियों से गजरते तो लोगों से राम-राम सा करते निकलते थे। अब वे जनता के बीच नहीं हैं। लेकिन उनका काम और व्यवहार मिसाल बनकर बरसों तक याद किया जाएगा।

राजस्थान पत्रिका, जयपुर 9-3-2009

राम-राम सा

जन्म: 11.11.1931 **देहावसान:** 8.3.2009

श्री गिरधारी लाल भार्गव जी 6 बार सांसद, 3 बार विधायक, 1 बार यू.आई.टी. अध्यक्ष एवं 10 से अधिक संघों के अध्यक्ष रहे।

एक कार्यक्रम में भार्गव मुख्यमंत्री अशोक गहलोत की प्रशंसा कर आए तो पार्टी के लोग उनसे नाराज हो गए। इस पर भार्गव का कहना था अब बताओ, मैंने गहलोत की प्रशंसा कर दी तो क्या बुरा किया। वो तो मुझे बुलाते हैं और मेरे बताए काम करते हैं।

राजस्थान पत्रिका, जयपुर 9-3-2009

संसद में सबके चहेते

उनकी गिनती श्रेष्ठ सांसदों में होती थी। उन्होंने 14वीं लोकसभा में विभिन्न मुद्दों पर 242 सवाल पूछे। उन्होंने 184 बार संसद की चर्चाओं में भाग लिया। सांसद के दस्तावेजों के अनुसार भार्गव ने सांसद निधि कोष का 94.65% उपयोग किया। जो बेहतर स्थिति मानी जाती है। उन्होंने कोष में सरकार की ओर से जारी किए 25.01 करोड़ रुपये में से 23.90 करोड़ खर्च किए। वे संसद में सभी पार्टियों के सांसदों के बीच लोकप्रिय थे।

दैनिक नवज्योति, जयपुर 10-3-2009

नम आँखों से विदाई

गिरधारी लाल भार्गव पंचतत्व में विलीन, शवयात्रा में उमड़ा हुजूम

सांसद गिरधारी लाल भार्गव को सोमवार को हजारों नम आँखों ने विदाई दी। यहाँ चाँदपोल शमशाम घाट पर दोपहर को राजकीय सम्मान से उनका अंतिम संस्कार किया गया। 21 तोपों की सलामी (देखें रंगीन चित्र) के बाद उनके पुत्र मनोज भार्गव ने मुखाग्नि दी, तो वहां मौजूद शहर के हजारों लोगों ने 'जब तक सूरज चांद रहेगा, गिरधारी तेरा नाम रहेगा' नारे से आसमान को गुँजा दिया। जयपुर के तीन सौ साठ साल पुराने इतिहास में यह दूसरी शवयात्रा थी, जिसमें भारी संख्या में शहर के हर वर्ग के लोगों ने भाग लिया। इससे पहले 1970 में जयपुर के राजा मानसिंह की शव यात्रा में इतना ही हजूम उमड़ा था। **(देखें रंगीन चित्र)**

दैनिक नवज्योति, जयपुर 10-3-2009

भार्गव के निधन पर जताया शोक

दिल्ली में अप्रवासी राजस्थानियों की विभिन्न संस्थाओं ने गिरधारी लाल भार्गव के निधन पर शोक व्यक्त किया है। राजस्थान रत्नाकर के चेयरमेन राजेन्द्र गुप्त, राजस्थान क्लब के अध्यक्ष सुरेश पोद्दार और राजस्थान संस्था संघ के अध्यक्ष जयनारायण खण्डेलवाल ने कहा कि स्वर्गीय भार्गव राजस्थानियों की मदद के लिए हमेशा याद किये जाएंगे। उन्होंने कहा कि भार्गव के निधन से दिल्ली के प्रवासी राजस्थानियों ने अपना बहुत बड़ा शुभचिन्तक खो दिया है।

दैनिक भास्कर, जयपुर 9-3-2009

अब सबकी पहुंच से दूर

रविवार की अलसाई भोर में जब अहमदाबाद से जयपुर को खबर मिली कि सांसद गिरधारी लाल भार्गव नहीं रहे, हर कोई अवाक रह गया। तीन दिन पूर्व आगामी चुनाव की टिकट तय होने के बाद लोग इसी इंतजार में थे कि उनके सीधे-सरल नेता हाथ जोड़े जल्द ही फिर जनसंपर्क पर आ रहे होंगे लेकिन नियति को कुछ और ही मंजूर था।

दैनिक भास्कर, जयपुर 9-3-2009

अब कौन पूछेगा हाल, नहीं रहे गिरधारी लाल

केवल अपनी प्रसिद्धि उनका उद्देश्य नहीं था जयपुर के विकास के लिए उन्होंने गुलाबी नगर विचार मंच बनाया और इसके तहत साप्ताहिक गोष्ठियों में वे अलग-अलग विभागों के अफसरों को बुलाते और लोगों से उनकी बात कराते समस्याएं वहीं हल हो जाया करती थीं। पीने के पानी की समस्या हो, आवारा पशुओं का मामला हो या बात बड़ी रेल लाइन की हो, भार्गव का योगदान हमेशा याद रखा जाएगा।

उत्तराखण्ड से प्रकाशित दैनिक हिन्दुस्तान, 14-3-2009

सांसद भार्गव की अस्थियां गंगा में विसर्जित

हरिद्वार । वरिष्ठ भाजपा नेता एवं जयपुर संसदीय क्षेत्र के सांसद गिरधारी लाल भार्गव की अस्थियां हर की पौड़ी पर विसर्जित की गईं।

शुक्रवार को उनकी पत्नी मालती भार्गव, पुत्र मनोज कुमार भार्गव, मामा देवी सिंह व जय सिंह, पुत्री मीनाक्षी देवी इत्यादि प्राय: 20 जन हरिद्वार पहुंचे। उनके परिजनों ने विधि विधान के साथ हरकी पैड़ी पर उनकी अस्थियां विसर्जित की।

गिरधारी लाल भार्गव - एक महान व्यक्तित्व को अंतिम श्रद्धांजली

हँसता हुआ नूरानी चेहरा
धोती कुरता पहन सदा ही,
हाथ जोड़ करते अभिनन्दन
एसे थे दामोदर नन्दन।
सरल स्वभाव और मधुर भाष्य
जन जन के प्रति उनका लगाव,
वो सब के थे, सब उनके थे
इसीलिये वर्षो से जन नायक कहलाते थे।
न जात पाँत, न छोटा बड़ा
सबके दुख सुख की सुनना,
यही उनका धर्म था, यही भगवान
सदा पर-सेवा में ही लगा रहता तन मन।
अपने समाज के हर पर्व में
होते शरीक चाहे कहीं भी हो,
अपनी व्यवहार कुशलता से
सबको कर लेते अपना मीत।

गिरधारी बन गये थे 'जयपुर के लाल'
और हो गये थे विरोधियों के लिये जंजाल
लेकिन शायद देवों की लोक सभा में भी
उनके जैसे की ही परमावश्यकता थी
जहाँ बुला लिया उनको काल के हाथ
और चले गये वो छोड़ कर सदा के लिये हमारा साथ
ऐसा ही होता है।
कृष्ण और राधा, गोपी और ग्वाल
सब रह नहीं सकते थे एक दूजे के बिना
लेकिन कृष्ण भी चले गये थे अचानक
सदा के लिये छोड़ कर सभी का साथ

ये भी तो गिरधारी थे - यथा नाम तथा गुण कर्म
ऐसे व्यक्तित्व को शत् शत् नमन् ...

- मथुरा प्रसाद भार्गव
महताब सिंह का नोहरा, अलवर

भार्गव के निधन से मैं व्यथित हूँ। वे अपने क्षेत्र के मुद्धों के प्रति संवेदनशील थे। जब तक जीवित रहे उनके समाधान के प्रयत्नशील रहे। सांसद में उन्होंने हमेशा प्रभावी भूमिका निभाई।

– राजनाथ सिंह, राष्ट्रीय अध्यक्ष, भाजपा

• • •

संसद ने साफ सुथरी छवि वाले सदस्य को खो दिया। पांच साल की अवधि में मैंने यही पाया कि राज्य के मुद्‌दों को लेकर काफी सजग रहते थे। वे अनुशासन में रहने वाले सांसद थे।

– चरणजीत सिंह अटवाल, लोकसभा उपाध्यक्ष

• • •

भार्गव एक कर्मठ लोकसेवक थे। जिन्होंने जन सेवा को अपना मूल मंत्र बनाया और इसे जीवन पर्यन्त निभाया। जनता की समस्याओं के प्रति सजग रहे। उनके निधन से राजस्थान को अपूरणीय क्षति हुई है।

– नवल किशोर शर्मा, राज्यपाल, गुजरात

• • •

खो दिया कर्मयोगी भाई – भंवरलाल शर्मा (भाजपा के वरिष्ठ नेता)

• • •

शत् शत् नमन – कैलाश नाथ भट्‌ट (भाजपा के पूर्व प्रदेश प्रवक्ता)

• • •

जनम-मरण-परण के गवाह – उजला अरोड़ा (भाजपा की वरिष्ठ नेता)

• • •

भार्गव के निधन से मुझे व्यक्तिगत आघात पहुँचा है। वे मेरे साथ विधायक भी रहे और बाद में सांसद बनकर दिल्ली आए। वे जनता से लेकर सांसदों तक सभी में लोकप्रिय रहे। – शीशराम ओला, केन्द्रीय मंत्री

• • •

कल की ही तो बात है, उनसे फोन पर बात हुई थी, वह चिर परिचित आवाज अब भी कानों में गूंज रही है। उनकी आत्मीयता, अपनापन जिसे चाहकर भी कोई बिसरा नहीं सकता। – घनश्याम तिवाड़ी, उप नेता प्रतिपक्ष

• • •

हम भाजपा कार्यकर्ताओं के लिए तो भार्गव अनुकरणीय थे। सार्वजनिक जीवन जीने वाले आदमी के लिये उनका पूरा जीवन दर्शनीय है। अपनी शादी में रिक्शे वालों को बाराती बनाकर ले गए थे।

– ओमप्रकाश माथुर, प्रदेशाध्यक्ष (भाजपा)

• • •

शुक्रवार को जब मैं महापौर बनने की बधाई स्वीकार कर रहा था, उसी समय भार्गव ने भी फोन पर बधाई दी। हमें इन्तजार था कि भार्गव आएँ और शहर की जरूरत और समस्याओं पर हमसे बात करें। यह अधूरी रही।

– पंकज जोशी, महापौर

• • •

सांसद में कामकाज निपटाने के बाद मौका मिलने पर बस पकड़ कर जयपुर पहुंचना उनका लक्ष्य होता। इसकी असली वजह अपने संसदीय क्षेत्र की जनता के सुख-दुख में शामिल होना होता था। – रासासिंह रावत, सांसद

• • •

Condolences

The untimely demise of Mr. Girdhari Lal Bhargava, the Honourable Member of Parliament from Jaipur has come as a shock to everyone who had known him, even distantly.

I had been hearing of him from school days when he defeated a former ruler of Jaipur to the Lok Sabha elections. It is sad to think that we will not hear that echo again after the upcoming elections, in which we all expected him to win.

Arjun Kumar, The Economic Times (Brand), 4th Floor, 7 Bahadur Shah Zafar Marg, New Delhi-2

श्री गिरधारी लाल भार्गव के साथ जुड़ी अनेक विचित्रतायें

- **प्रथम** तो कोई इतना अधिक सात्त्विक व्यक्ति राजनीति में जाये, यही कम विश्वास के योग्य है।
- **दूसरे** यदि वह राजनीति में जाये भी तो सफल हो जाये, यह और भी अधिक आश्चर्य का विषय है।
- **तीसरे** यदि वह एक बार सफल हो भी जाये तो बारम्बार सफल होता ही चला जाये, यह विस्मयजनक है।
- **चौथे** बारम्बार सफल होकर उसे अभिमान छू तक न जाये, यह भी विचित्र है।
- **पाँचवे** वह किसी प्रकार का आत्म-विज्ञापन किये बिना इतना लोकप्रिय हो जाये, यह भी कठिन है।
- **छठे** इतना लोकप्रिय होकर भी, वह ऐसा अजात शत्रु बना रहे कि राजनीति में वह सिद्धान्ततः जिनसे असहमत था वे भी उसकी प्रशंसा करें, यह दुर्लभ है।
- **सातवें** राजनीति में रह कर वह न किसी जातिवाद की बात करे, न सम्प्रदायवाद की, न भाषावाद की, न प्रान्तवाद की, यह सरल नहीं है।
- **आठवें** उसका मौन रहना भी इतना अधिक प्रभावशाली हो, यह भी कम आश्चर्य नहीं।
- **नवें** लगे कि वह कुछ भी नहीं कर रहा किन्तु इतना अधिक कर जाये, यह कोई कैसे मान लेगा?
- **दसवें** काजल की कोठरी में रहकर भी जिस पर कालिख की एक लीक भी न लगे, यह कैसे सम्भव हुआ?

इतनी अधिक विचित्रतायें एक व्यक्ति में एक साथ रहना क्या यह सिद्ध नहीं करता कि वह गीता में वर्णित कर्मयोगी था क्योंकि -

卐 वह कर्म कुशल था।
卐 स्थित प्रज्ञ था।
卐 कर्मफल के प्रति निष्काम था।
卐 नर में नारायण का दर्शन करता था।
卐 कर्तृत्व के अहकांर से रहित था।
卐 उसका सर्वस्व ईश्वरार्पित था।

❖ ❖ ❖ ❖ ❖

मन्त्री की कुर्सी नहीं, केवल सेवा-भाव
जयपुर नृप भी झुक गये, ऐसा विकट प्रभाव
ऐसा विकट प्रभाव, किन्तु जीवन साधारण
श्री गिरधारी लाल, आपका शुद्ध आचरण
देह गयी, पर शेष है ऐसा विमल प्रकाश
जिससे आलोकित हुए पृथ्वी और आकाश

जी-1, पैराडाइज अपार्टमेंट, डी-148, दुर्गा मार्ग, बनी पार्क, जयपुर — **प्रोफेसर दयानन्द भार्गव**
मो. 09352565007, 09660578086 — 8 मार्च, 2009

अखिल भारतीय भार्गव सभा
की ओर से श्रद्धाँजली

आदरणीय भाई गिरधारी लाल जी के आकस्मिक निधन से पूरे समाज में तथा विशेषकर हमारे भार्गव समाज में जो स्थान रिक्त हुआ है, उसको भरपाना कठिन ही नहीं वरन् असम्भव होगा। वह सभी वर्गों के लोगों को एक परिवार समझते थे तथा सभी के सुख-दुख में सदैव सहभागी रहते थे।

पिछले पचास वर्षों से अधिक सक्रिय राजनीति से जुड़े होते हुये भी एक सच्चे जनसेवक तथा एक संत का जीवन व्यतीत करते थे।

पिछले अनेक वर्षों के सम्पर्क में मुझे उनका बहुत स्नेह तथा आर्शीवाद प्राप्त होता रहा है। मैं अपनी, सभा के प्रधान श्री प्रकाश नारायण एवं पूरे भार्गव समाज की ओर से निम्न चार लाइनों के साथ उन्हें श्रद्धांजली अर्पित करता हूँ।

हमारी आँखों में आज नमी है,
जीवन में हमारे अब आपकी कमी है।
टूटने न देंगे ये प्यारा सा साथ,
यादों में रखेंगे आपकी हर छोटी सी बात।

दिनांक : 10-3-2009

ह० मनमोहन कुमार भार्गव
प्रधान सचिव

दिल्ली भार्गव समाज की ओर से श्रीमती निशा भार्गव द्वारा श्रद्धेय श्री गिरधारी लाल भार्गव जी को श्रृद्धाँजली

दिनांक 13 मार्च 2009 सायं 5 बजे जयपुर से आये अस्थि कलश दर्शन के अवसर पर प्रायः 150 भार्गव सदस्य एवं 200 अन्य समाज के सदस्य उपस्थित थे।

6, अशोक रोड पर आज भी हम सम्मिलित हैं, पहले भी होते रहे हैं, पर आज के सामूहिक होने में और हमेशा में अन्तर है। आज हम एक सूरज को अर्क दे रहे हैं, श्रद्धा सुमन अर्पित कर रहे हैं, उनके सुकार्यों को याद कर रहे हैं। उनकी यश कीर्ति का अन्दाज लगा रहे हैं। सब कुछ है, पर वे नहीं हैं, जिनके लिए और जिनके निवास पर हम एकत्रित हुए हैं। कितने-कितने कार्यक्रम हुए हैं इस निवास पर, और गिरधारी लाल जी हमेशा हमें अपना सानिध्य प्रदान करते रहे। किसी अहसान के साथ नहीं बल्कि स्नेह के साथ, विनम्रतापूर्वक हाथ जोड़कर हमेशा हमारे साथ रहे। सबको आग्रहपूर्वक आमन्त्रित करना उन्हें रौनक का और हमें गर्वित होने का अवसर देता रहा।

हमारे समाज के इकलौते लाल, श्री गिरधारी लाल M.P. रहे। लगातार 6 चुनावों में जीत हासिल कर लेना मामूली दावेदारी नहीं होती। सच ये है उनकी जीत मतों की जीत नहीं होती थी मन जीतने की जीत होती रही। उन्होंने जाने कितनों के दिलों पर राज किया। उनका साम्राज्य सचमुच पूरे भारत में फैला था।

शादी-विवाह, जन्म-दिन, वर्ष-गाँठ, उठावनी, मृत्यु आदि विविध सुख-दुःख में वे सबके साथी थे। कहते थे मैं नाई भी हूँ, धोबी भी हूँ, चमार भी हूँ तब कहीं भार्गव हूँ।

सबके अपने, सबके सपने गिरधारी लाल जी हम सबको बहुत याद आयेंगे।

उनका Standard of Living, 6 अशोक रोड नहीं था, M.P. होना नहीं था बल्कि उनके Life Standards थे जिनके कारण वे सबके प्रिय नेता थे। सादगी उनका विशेष गुण था।

जब लोग चिल्ला-चिल्लाकर ऊँचा बोल बोलकर अपनी बात कहते हैं वे बहुत मध्यम आवाज में अपनी बात दूसरों तक पहुंचा देते थे। उनका M.P. होना Member of Parliament नहीं था, बल्कि Member of Public था। वे जनता के लिए ही थे। He was a man of success and a man of values.

उनमें Energy इतनी थी कि सुबह यहां, शाम वहां, और रात को travelling में। बहुत मजबूत दिल वाले थे फिर उन्हें Heart Attack होना अचम्भा सा लगता है। पर काल की क्रूरता, प्रभु की निष्ठुरता में भरोसा करना पड़ता है।

"The only joy in the world is to begin" हो तो इस अन्तिम विदाई को भी हम उनकी यादों की शुरुआत मानकर, उनके यथार्थ आदर्श और लक्ष्यों को beginning मानकर श्रद्धाँजली देते हैं। मालती जी और उनके परिवार को यह विश्वास दिलाना चाहते हैं कि दुःख के इन क्षणों में हम सब, हमारा समाज सहर्ष उनके साथ है।

जयपुर भार्गव सभा

श्रद्धाँजली

आदरणीय **सांसद श्री गिरधारी लाल जी भार्गव** का हृदयाघात से आकस्मिक निधन रविवार 8 मार्च 2009 को सुबह अहमदाबाद के अपोलो अस्पताल में हो गया था।

परमपिता परमेश्वर ने श्री गिरधारी लाल जी को अद्‌भुत समाज सेवी के रूप में इस धरा पर भेजा था। ऐसे समाज सेवी की सेवायें अचानक समाप्त हो जायेंगी, यह सोच कर मन को बहुत कष्ट होता है। आप केवल भार्गव समाज के ही नहीं अपितु सारे देश में बहुत सक्रिय एवं लोक प्रिय नेता थे।

आपका नाम स्वर्णिम अक्षरों में लिखा जायेगा तथा आपकी प्रेरणा, त्याग, सादगी पूर्ण जीवन, दयाभाव, मधुर व्यवहार सदैव हमारा मार्ग दर्शन करता रहेगा। आपके द्वारा भार्गव समाज को दिये गये योगदान को समाज कभी नहीं भुला पाएगा।

जयपुर भार्गव सभा (रजि.), महर्षि भृगु सदन उपसमिति, भार्गव महिला सभा, जयपुर, और भार्गव युवा संघ, जयपुर की ओर से एक श्रद्धाँजलि सभा का आयोजन 15.3.2009 को सायं 4.30 से 5.30 बजे तक महर्षि भृगु सदन, सुन्दर मार्ग, तिलक नगर, जयपुर पर किया गया था।

इस अवसर पर उनकी जीवनी पर प्रकाश डाला गया और भजन सन्ध्या का आयोजन किया गया। जयपुर भार्गव सभा, महर्षि भृगु सदन उपसमिति, अखिल भारतीय भार्गव सभा, अखिल भारतीय भार्गव महिला सभा, भार्गव महिला सभा जयपुर, भार्गव युवा संघ जयपुर और मानसरोवर समिति सभी के द्वारा शोक सन्देश पढ़े गये। अन्त में सभी ने आदरणीय श्री गिरधारी लाल जी भार्गव को पुष्पों से अश्रुपूरित श्रद्धाँजलि दी।

कर्म, वचन और व्यवहार से जो हर मन में जगह बनाते हैं,
दूर चले जाने के बाद भी वो सदा याद आते हैं।

विनोद भार्गव, सचिव

• • •

अलवर भार्गव सभा (रजि.)

शोक सन्देश

सदा खादी का धोती कुरता पहिने व हाथ जोड कर सभी का अभिनन्दन करने वाले जयपुर के लाल, श्री गिरधारी लाल के सदा के लिये हमारे बीच से चले जाने से अलवर का पूरा भार्गव समाज शोक मग्न है। पूरे देश में वे राजनीति के क्षेत्र में भार्गव समाज के एक सम्बल के रूप में देखे जाते थे। सादा जीवन उच्च विचार के ज्वलन्त रूप होने के कारण कोई भी अपना दु:ख दर्द लेकर उनके पास जाने में हिचकिचाता नहीं था और सदा उनके व्यवहार व मधुर भाव से सन्तुष्ट होकर ही आता था। अखिल भारतीय भार्गव या स्थानीय भार्गव समाज के कार्यक्रमों में भाग लेना व समाज की सेवा में हर प्रकार का सहयोग देना जैसे उनकी आदत बन गई थी। ऐसे मधुर भाषी व सरल स्वभाव के समाज सेवी व्यक्तित्व की क्षति पूर्ति होना बहुत कठिन है।

अलवर भार्गव सभा पूरे अलवर भार्गव समाज की ओर से उन्हें नमन करती है तथा श्रद्धाँजली अर्पित करती है। हम परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं कि उनकी पुण्य आत्मा को अपनी गोद में चिर-विश्राम दें तथा सभी परिवारजनों को उनके बिछोह का दु:ख सहन की शक्ति प्रदान करें।

दिनेश भार्गव
अध्यक्ष

सर्वेश भार्गव
सचिव

अजमेर भार्गव सभा
शोक सन्देश

अजमेर भार्गव सभा एवं महिला भार्गव सभा, अजमेर की कार्यकारिणी एवं समाज के परिवार के स्वजन माननीय, आदरणीय श्री गिरधारी लाल भार्गव के आकस्मिक निधन पर शोक व्यक्त करते हैं तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को शान्ति एवं सद्‌गति प्रदान करें तथा शोकाकुल परिवार को इस क्षति को सहन करने की शक्ति दें।

श्रीकृष्ण भार्गव, सचिव

• • •

कानपुर भार्गव सभा (रजि.)
शोक सन्देश

श्री गिरधारी लाल जी के निधन का समाचार सुनकर कानपुर भार्गव सभा के समस्त पदाधिकारीगण एवं समाज अत्यन्त शोकाकुल हो गया। माननीय का सहज स्वभाव, सरल व्यक्तित्व एवं समाज के प्रति निष्ठा का एक अनूठा संयोजन रहा है। कानपुर में आयोजित अखिल भारतीय भार्गव सभा के 115वें वार्षिक अधिवेशन में विशिष्ठ अतिथि का पद सुशोभित कर कानपुर का मान बढ़ाया था। प्रभु उनकी दिवंगत आत्मा को शान्ति एवं परिवार को दु:ख सहने की शक्ति प्रदान करें।

डा. आर.आर भार्गव, अध्यक्ष

भारत भूषण भार्गव, सचिव

• • •

भोपाल भार्गव सभा
शोक सन्देश

आदरणीय श्री गिरधारी लाल जी भार्गव की असामयिक मृत्यु का समाचार प्राप्त हुआ। हम सभी इस समाचार से स्तब्ध रह गये। समस्त भोपाल भार्गव समाज में शोक की लहर दौड़ गयी। श्री गिरधारी लाल जी भार्गव हम सबके लिये एक प्रेरणा स्रोत थे। उन्होंने लगातार तीन दशकों तक लोक सभा में जयपुर का प्रतिनिधित्व किया जो बहुत ही प्रशंसनीय है। साथ में समस्त भार्गव समाज के लिये भी एक गौरव की बात है।

श्री गिरधारी लाल जी भार्गव ने न केवल सामाजिक जीवन में बल्कि राजनैतिक जीवन में भी उच्च मापदण्ड स्थापित किये। उनके द्वारा किये गये सामाजिक एवं राजनैतिक कार्य हमारे लिये एक आदर्श रहेंगे। वे भार्गव समाज की सेवा के लिये भी सदैव तत्पर रहते थे। यदि उनको भार्गव शिरोमणि कहा जाय तो अतिशयोक्ति न होगी। हम सब उनकी असामयिक मृत्यु से व्यथित हैं। हम भोपाल भार्गव सभा की ओर से तथा समस्त भोपाल के भार्गव बन्धुओं की ओर से श्री गिरधारी लाल जी भार्गव को अश्रुपूरित श्रद्धांजली अर्पित करते हैं एवं ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें।

अनिल कुमार भार्गव, सचिव

• • •

श्रद्धाँजली

माननीय श्री गिरधारी लाल भार्गव के आकस्मिक निधन पर हम श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं तथा भगवान से प्रार्थना करते हैं कि उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे तथा शोकाकुल परिवार को इस दु:ख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

शोभना-मोतीलाल भार्गव

नारायण टावर्स, फ्लैट नं. 9, सी-123, मंगल मार्ग, बाबू नगर
जयपुर-302015, दूरभाष: 041-2700415

शोक संदेश

मन बेचारा उदास, कोने में बैठा, यह मानने के लिये तैयार ही नहीं कि आज आदरणीय भाई एवं सांसद पं. गिरधारी लाल भार्गव हमारे बीच नहीं रहे। उनका नाम आते ही उनके मुस्कराते सौम्य चेहरे की छवि स्वत: स्मृति पटल पर छा जाती है। किन्तु यही है जीवन का निचोड़, सत्य, फिलोसॉफी एवं ईश्वरीय चक्र जिसके आगे सब बेवश एवं नतमस्तक हैं।

श्री गिरधारी लाल केवल भार्गव समाज या किसी एक समाज विशेष के नहीं थे। उनके मन में तो 'वसुदेव कुटुम्बकम्' की भावना का निवास था। वे एक सच्चे कर्मयोगी, राजनेता, नि:स्वार्थ कार्यकर्ता, देशभक्त एवं गरीबों के मसीहा थे। भार्गव ही नहीं बल्कि अन्य समाज की सामाजिक गतिविधियों के लिये आपको दिल्ली स्थित कोठी के द्वार सदैव खुले रहते थे। भार्गव समाज को आप सदैव सामूहिक विवाह के लिये प्रेरित करते रहे।

मुझे आज भी याद है कि गत चुनाव में जब विजयश्री प्राप्त कर आये तब में 'भार्गव पत्रिका' की ओर से आपसे साक्षात्कार लेने हेतु उनके निवास 6 अशोक रोड़ गया और मैने पूछा कि एक बार आप महाराजा जयपुर, श्री भवानी सिंह जी से रिकार्ड मतों से विजयी हुये और अब आप लगातार पाँचवीं बार सांसद बने हैं। इस विशेष उपलब्धि के बाद भी आपके मन में पद का मोह क्यों नहीं? आपने कहा कि 'मैं भगवान श्रीकृष्ण के कर्म योग पर विश्वास करता हूँ फल पर नहीं'। 'कर्मण्ये वाधिकारस्ते मां फलेशु कदाचनम्'। मैं तदानुसार कर्म कर रहा हूँ। वैसे भी भाग्य और समय से पहले कुछ नहीं मिलता। ऐसी थी उनकी निष्काम भावना। वे अपनी पत्नी श्रीमती मालती को अपनी सफलता का श्रेय देते थे।

आज वे हमारे बीच नहीं हैं किन्तु उनके द्वारा की गई सेवायें, हमें सदैव उनकी स्मृति दिलाती रहेंगी। ईश्वर उन्हें स्वर्ग में चिरशान्ति प्रदान करे और परिवार को इस घोर दु:ख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

ओ३म शान्ति शान्ति शान्ति!

- **बालकृष्ण भार्गव,** सह-संपादक, भार्गव पत्रिका, पूर्व प्रधान, दिल्ली भार्गव सभा
- **श्रीमती संतोष भार्गव,** उपाध्यक्ष, महिला सभा दिल्ली
(193-डी, डी.डी.ए. फ्लेट्स, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली-110027, दूरभाष: 011-25972177, मो. 09891910968)

• • •

शोक संदेश

पं. गिरधारी लाल भार्गव : एक सहज-सरल व्यक्तित्व

जन साधारण के हृदय पटल पर अपनी सहजता सरलता की छाप छोड़े और गहराई तक अपनी पैठ बनाये व्यक्तित्व का नाम ही गिरधारी लाल हुआ करता था। नाम के अनुरूप सबके साथ दु:ख-कष्ट में सबके बीच पहुँचने वाले जन-जन के लाल अब हमारे बीच नहीं रहे - उनके कृतित्व और कर्म ही हमारे बीच प्रेरणा देते रहेंगे। उनकी सरलता का अन्दाज़ इसी से होता था कि विगत छ: बार वे सांसद बने परन्तु किसी पद की आकांक्षा से परे अपने कर्तव्य का पूर्णरूपेण निर्वहन कर एवं सातँवी बार लोकसभा के उम्मीदवार का चयन होने पर भी कर्म के प्रति समर्पित थे। विगत वर्षो में समाज की प्रत्येक वार्षिक बैठकों में अति उत्साह से उपनी उपस्थिति दर्ज़ कराना और सार्थकता से सबके बीच समाज से सम्बन्धित विषयों का चिन्तन करना उन जैसे व्यक्तित्व का अनूठापन था। आप मीसा में बन्द हुए, मीसा बन्दियों के प्रेरणा स्रोत रहे, प्रत्येक वर्ग में अपनी-अपनी पहचान बनाये श्रद्धेय को उनके कृतित्व के लिये हमेशा याद किया जाता रहेगा। उनका परिवार इतना विशालतम था कि अन्तिम समय में उमड़ता जनसमुदाय इसका द्योतक बनकर उन्हें अन्तर्मन से नमन करता रहा। उनको श्रद्धासुमन अर्पित करता रहा। हम सब भी आहत हैं, प्रभु उनकी दिवंगत आत्मा को चिरशान्ति प्रदान करे, यही परमपिता से प्रार्थना एवं याचना है।

3ए/3, आजाद नगर, कानपुर-2, मो. 09415728151 **मृदुला-सत्येन्द्र भार्गव**